अभिव्यक्ति

प्रथम अंक

August – October (2011)

CSIR-Central Building Research Institute, Roorkee(UK)

Message

It gives me immense pleasure to learn that our PGRPE students with active co-operation, support and guidance of our scientists have decided to publish the first issue of the wall magazine, **“Abhivyakti”**. It indeed demonstrates the enthusiasm and their love for the Institute. I am sure, through this outlet, students of PGRPE programme and our staff members will be able to express their literary skills. Any magazine of an Institute generally exhibits the ideas of the people, their thinking through their literary skills and in turn the same speaks about the Institute. I hope that our colleagues will uphold the image of the institute to the outside world through this endeavour. **“Abhivyakti”** is unveiled on a very auspicious day, on which we are celebrating the 65th Independence Day of our country. I wish all success of the magazine.

Jai Hind !

(S. K. Bhattachayya)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष व आनन्द का अनुभव हो रहा है कि हमारे वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन व सहयोग से पीजीआरपीई के छात्रों की भिति पत्रिका ***अभिव्यक्ति*** का प्रथम अंक प्रकशित हो रहा है. निसंदेह ही यह उनका संस्थान के प्रति स्नेह व उत्साह का प्रतीक है. मुझे पूर्ण विश्वास है कि इसके माध्यम से पीजीआरपीई के छात्र व हमारे कर्मचारी अपनी साहित्यिक प्रतिभा दिखा सकेंगे. संस्थान की कोई भी पत्रिका उसके लोगों के विचार व उनकी सोच को साहित्यिक प्रतिभा के माध्यम से दर्शाती है और यही संस्थान के बारे में अवगत कराती है. मुझे आशा है कि हमारे साथी संस्थान के सम्मान को संसार के सम्मुख इसके माध्यम से बनाये रखेंगे. ***अभिव्यक्ति*** का अनावरण बहुत ही पावन दिन, जिस दिन हम सभी अपने देश का 65वां स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं, हो रहा है. मैं पत्रिका की सफलता की कामना करता हूं.

जय हिन्द !

(श्रीमान कुमार भट्टाचार्य)

सम्पादकीय

मित्रो,

आज अपने स्वतंत्रता दिवस पर सथियो आपके लिये हम एक उपहार के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं एक भित्ति पत्रिका ***अभिव्यक्ति*** द्य ***अभिव्यक्ति*** एक माध्यम है हम सभी की सांस्कृतिक और साहित्यिक प्रतिभा को शब्द रूप देने काद्य आज के भौतिकवादी युग में अपने तनाव भरे जीवन से कुछ अलग सोचने का मंच है ***अभिव्यक्ति*** द्य हमारा मानना है कि ***अभिव्यक्ति*** एक उत्प्रेरक का कार्य करेगी उन सभी के लिये जो अपने मन में गुमड़ रहे विचारों को शब्द रूप देने के लिये हमेशा ही अकुलाते रहते हैं, किंतु दे नहीं पातेद्य हमें आशा है कि ***अभिव्यक्ति*** आपको विवश करेगी कि आप अपनी वैज्ञानिक सोच से हटकर भी कुछ गुनें और लिखेंद्य हमें आशा है कि हमारा प्रथम प्रयास ***अभिव्यक्ति*** के रूप में आप सभी के मन व मस्तिष्क पर अपनी छाप अवश्य छोड़गाद्य अभिव्यक्ति को हमेशा आवश्यकता रहेगी आपके सुझाव व योगदान कीद्य हम आपकी सभी प्रकार की ललित कालों को ***अभिव्यक्ति*** के माध्यम से सभी के सम्मुख लाने का प्रयास करते रहेंगेद्य

- प्रदीप चौहान

मुख्य सम्पादक (अभिव्यक्ति)

हम मूर्ख सही, आप तो खुश हो!

- *जलज पराशर*

कबीर का यह दोहा आपको भी याद होगा की रे गन्धी! मितअंध तू, अतरि दिखावत काहि, कर अंजुरी को आचमन, मीठो कहत सराहि। सुगंध बेचनेवाले तू इन लोगों को इत्र दिखाने की मूर्खता क्यों कर रहा है। ये लोग तो इत्र को अंजुरी में लेकर चखेंगें और कहेंगें कि वाह, कितनी मीठी है। लेकिन कभी-कभी मूर्खता दिखाने में भी फायदा होता है। कैसे? तो... मैं आपको एक कहानी सुनाता हूं।

एक समय कि बात है। उज्जैनी राज्य के एक गांव में एक महान गणितिज्ञ रहा करता था। राजा उससे अक्सर आर्थिक मसलों पर राय लेते थे। गणितिज्ञ की ख्याति उत्तर में तक्षशिला और दक्षिण में कांची तक फैली हुई थी। इसिलए उसे बहुत दुख हुआ जब गांव के मुखिया ने उससे कहा की आप निशचित रूप महान गणितिज्ञ हैं, लेकिन आपके बेटे को तो सोने और चांदी की कीमत का अंतर नहीं पता। गणितिज्ञ ने अपने बेटे को बुलाकर पूछा – सोने और चांदी में क्या ज्यादा मूल्यवान है? बेटे ने कहा – सोना। गणितिज्ञ बोले – फिर गांव का मुखिया क्यों तुम्हारा मजाक उड़ाता है। कहता है की तुम्हें सोने-चांदी के मूल्य का भेद नही पता है। वह गांव के बड़े-बूढे के सामने मेरी भी तोहीन करता है। बेटा, मुझे समझाओ की चक्कर क्या है?

बेटा पिता से बोला – हर दिन जब में स्कूल जाता हूं तो गांव का मुखिया मुझे बुलाता है। वहां उसके साथ गांव के तमाम लोग भी होते है। वह सबके सामने अपने एक हाथ में चांदी का सिक्का रखता है और दूसरे में सोने का और मुझ से कहता है की इनमें से जो भी सिक्का ज्यादा कीमती हो, उसे मैं उठा लूं। मैं चाँदी का सिक्का ही उठाता हूं। वह हंसता है। गांव वाले भी ठहाका लगाते हैं। ऐसा हर दिन होता है। इसीलिए वे आपसे कहते हैं की मुझे सोने-चांदी के मूल्य का भेद नहीं मालूम। उन्होंने ने बेटे से पूछा की सच्चाई जानते हुए भी वह सोने का सिक्का क्यों नहीं उठाता ? इसके जवाब में बेटा अपने पिता को कमरे में ले गया और उन्हें एक बक्सा दिखाया। बक्से में चाँदी के सैकड़ों सिक्के भरे पड़े थे। अब पिता की तरफ मुखातिब होकर गणितिज्ञ इस बेटे ने कहा - जिस दिन सोने का सिक्का उठा लूँगा, उसी दिन इन मुखिया और गांववालों का यह खेल बंद हो जाएगा। वे मजा लेना बंद कर देंगे और मुझ सिक्के मिलने बंद हो जाएंगे।

कहानी का सार यह है कि कभी-कभी अपने बड़े -बूढों को खुश करने के लिए हमें मूर्ख दिखना पड़ता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं होता कि हम जिंदगी के खेल में हार रहे होते हैं। एक जगह जीतने क लिए कभी-कभी दूसरी जगह हारना पड़ता है।

जर्द पत्तों का सफ़र (शमशेर सिंह)

संकलनकर्ता - अमन

ये काम है तो कठिन हाँ चलो मगर ढूंढें
नदी के तट पे गिरे रेत के वो घर ढूंढें
महक उठे हैं ये काँटें गुलाब के मानिंद
चलो की बाग़ में अब तितलियों के पर ढूंढें
ये कह रही है मुसाफिर से रास्ते की थकन
मैं साथ हूँ तो तेरे चल नया सफ़र ढूंढें
सभी हैं पीर, पयम्बर की संत और पण्डे
कोई बताये यहाँ आदमी किधर ढूंढें
उगे सहन में मेरे और छाओं दे तुझको
वफ़ा की गलियों में हम ऐसा इक शजर ढूंढे
यही तकाजा है महकी हवाओं का
चलो दरख्तों के दामन से कुछ समर ढूंढे

कुहासा

- यादवेन्द्र

कई बार हम देखने पर ज्यादा जोर देते हैं
कई बार महसूस करने पर...
कचहरियों की तरह प्रमाण को जरुरी मानते हैं कुछ लोग
और पिटी हुई स्त्री की आँखों में दुबके डर की बजाय
शरीर पर दर्ज चोट के निशान ढूँढते हैं लेंस ले कर....
छूना, सुनना,सूँघना, चखना बीच बीच में पड़ने वाले पड़ाव हैं.

बड़ी शिद्दत से ऐसे भी लोग हैं जो चाहते हैं
कभी कभी कुछ देखें न...ऑंखें बंद किये रहें
और ठोस छुअन के साथ नंगे पाँव बिना गिरे पड़े
स्मृतियों की तंग गलियों में लम्बा चक्कर लगा कर
बिना किसी से पूछे समझ जाएँ कौन कौन गाँव छोड़ गया.

आँखें खुली रखने का देखने से दरअसल कोई सम्बन्ध नहीं है
देखते हम वही हैं जो शिकारी ड्रोन सा सचमुच देखना चाहते हैं
गर्दन घूमे न घूमे,निगाह दसों दिशाओं में घूम जाती है
फिर भी कइयों को तो शरीर से चिपके जोंक तक नहीं दिखते
हाँ,सामने बैठा शख्स तिरछी नजर पलभर में ही जरुर भांप लेता है.

प्रेम दिखाई नहीं देता सिवा आँखों की तरलता के
क्रूरता होने से पहले सिर्फ आँखों की धधक में तैरती है
अवसाद को तिरछी नजर की तरह साथ के लोग देखते हैं मारते हुए कुंडली.
उसी तरह महकता है तभी दिखता है
कुहासा
जब सौंप देता है अपनी सारी तरलता
रुखी सूखी पथरीली धरती को.

The Theory of Negativity

- **Siddharth**

It's seems that now a days the makers of famous animated movie "Kung-fu Panda" have become very clever in picking up suitable characters for the role of a villain. Interestingly in both the series released till now the national animal and the national bird of our country were thought to be the most befitting character as villain. I do agree that "The Tiger" is the most ferocious wild creature in the animal kingdom, so it may be considered as villain. But it is very-very surprising that the most beautiful and human friendly bird "The Peacock" is also fit for the same position (as shown in part – II). Now this cannot be a mere co-incidence but was well decided to imprint a negative picture in mind of viewers that "The Peacock" deserves to be a symbol of evil. Had it been a bird like "Eagle" it would have generated lot of criticisms, but it is clear that there is absolutely no problem with the present villain as it is always a very cheap & petty issue to show anything having Indian connection we rarely ponder upon these thing and silently watch the movie to entertain ourselves unaware of the wrong message it actually conveys.

This is nothing new to us because starting from past, movies like "***Salaam Mumbai***" to near past released movie like "***Slumdog Millionaire***" and many other in between have directly or indirectly tried to show things related to the dark side of our society like poverty, human trafficking and other anti-social activities that do exist in the country and the Indian public have never raised any questions rather these were appreciated and also nominated for national and international film awards. It is really unfortunate that we forget to see the brighter site of our society and the films like "***Wednesday***", "***Dor***" was hardly got appreciation from the public.

Friends, the time has come that we should change our attitude, because only attitude can change our lives and society.

Be Positive, Think Positive and Do Positive.

A Night Safari

- **Kaushik**

The adventures and mysteries of night call me silently

The dull moon waves its hands to me imperceptibly

The shinning stars want to embrace me lovingly

The cloudless sky wishes to dive inside me deeply

I don't know why I am sleepless

The nights pass by in darkness

My obsessed mind whispers in my irresolute ears

My unspoken words start running out of breaths

The leaves of trees discourse in gentle breeze

My mind and soul come to an unconditional cease

Although I have always this desire to fly

Without wings of imagination, I will die........

- Photographed by ***A. K. Jethi***

Our thanks to Raja, Venktesh, Surya, Ishwarya

Chief-Editor: Pradeep Chauhan

Editors: Randhir Bharat, Koushik Pandit